रमज़ान

किस तरह गुज़ारें

ख़िताब

जस्टिस मौलाना मुफ़्ती
मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी

रमज़ान

किस तरह गुज़ारें

ख़िताब

जस्टिस मौलाना मुफ़्ती
मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी

अनुवादक

मु० इमरान क़ासमी एम०ए० (अलीग)

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०

422, मटिया महल, ऊर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली 6

फ़ोन आफ़िस 3289786,3289159 आवास 3262486

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

नाम किताब — **रमज़ान किस तरह गुज़ारें**

ख़िताब — मौलाना मु० तक़ी उस्मानी

अनुवादक — मुहम्मद इमरान क़ासमी

संयोजक — मुहम्मद नासिर ख़ान

तायदाद — 2100

प्रकाशन वर्ष — अप्रैल 2002

कम्पोज़िंग — इमरान कम्प्यूटर्स
मुज़फ़्फ़र नगर (0131-442408)

\>>>>>>>>>>>>

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०

422, मटिया महल, ऊर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली 6

फ़ोन आफ़िस 3289786,3289159 आवास 3262486

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

क्र.स.	क्या?	कहां?
1.	रमज़ान, एक अज़ीम नेमत	5
2.	उम्र में बढ़ोतरी की दुआ	6
3.	ज़िन्दगी के बारे में हुज़ूर सल्ल. की दुआ	8
4.	रमज़ान का इन्तिज़ार क्यों?	8
5.	इन्सान की पैदाइश का मकसद	9
6.	क्या फ़रिश्ते इबादत के लिये काफ़ी नहीं थे?	10
7.	इबादतों की दो किस्में	11
8.	पहली किस्म बराहे रास्त इबादत	11
9	दूसरी किस्म, बिलवास्ता इबादत	12
10.	"हलाल कमाना" बिलवास्ता इबादत है	12
11.	बराहे रास्त इबादत अफ़ज़ल है	13
12.	एक डॉक्टर साहिब का वाकिआ	13
13.	नमाज़ किसी हाल में माफ़ नहीं	14
14.	मख़्लूक की ख़िदमत दूसरे दर्जे की इबादत है	15
15.	दूसरी ज़रूरतों के मुकाबले में नमाज ज़्यादा अहम है	15
16.	इन्सान का इम्तिहान लेना है	16
17.	यह हुक्म भी ज़ुल्म न होता	17
18.	हम और आप बिके हुए माल हैं	17
19.	इन्सान अपनी ज़िन्दगी का मकसद भूल गया	19
20.	इबादत की ख़ासियत	19

क्र.स.	क्या?	कहां?
21.	दुनियावी कामों की ख़ासियत	20
22.	रहमत का ख़ास महीना	20
23.	अब निकटता हासिल कर लो	22
24.	रमज़ान का स्वागत	22
25.	रमज़ान में सालाना छुट्टियां क्यों?	23
26.	हुज़ूर सल्ल. को इबादाते मकसूदा का हुक्म	24
27.	मौलवी का शैतान भी मौलवी	26
28.	नज़्दीकी के चालीस दर्जे हासिल करें	27
29.	एक मोमिन की मेराज	27
30.	सज्दे में अल्लाह की निकटता	28
31.	कुरआने करीम की तिलावत ख़ूब ज़्यादा करें	29
32.	नवाफ़िल की ज़्यादती करें	30
33.	सदकों की ज़्यादती करें	30
34.	अल्लाह के ज़िक्र की ज़्यादती करें	30
35.	गुनाहों से बचने की पाबन्दी करें	31
36.	ख़ूब दुआएं करें	32

रमज़ान किस तरह गुज़ारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَسَنَدَنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا، اَمَّا بَعْدُ:

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ، بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِیْ اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ، فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ" (سورة البقرة:۱۸۵)

امنت بالله صدق الله مولانا العظيم، وصدق رسوله النبی الكريم ونحن علیٰ ذالك من الشاهدين والشاكرين، والحمد لله رب العالمين۔

रमज़ान, एक अज़ीम नेमत

बुज़ुर्गाने मुहतरम व प्यारे भाईयो! यह रमज़ान मुबारक का महीना अल्लाह जल्ल शानुहू की बड़ी अजीम नेमत है, हम और आप इस मुबारक महीने की हकीकत और इसकी क़द्र

कैसे जान सकते हैं, क्योंकि हम लोग दिन रात अपने दुनियावी कारोबार में उलझे हुए हैं और सुबह से शाम तक दुनिया ही की दौड़ धूप में लगे हुए हैं। और माद्दियत के भंवर में फंसे हुए हैं। हम क्या जानें कि रमज़ान क्या चीज़ है? अल्लाह जल्ल शानुहू जिनको अपने फ़ज्ल से नवाज़ते हैं और इस मुबारक महीने में अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ से अनवार व बरकतों का जो सैलाब आता है उसको पहचानते हैं, ऐसे हज़रात को इस महीने की क़द्र होती है। आपने यह हदीस सुनी होगी कि जब नबी–ए–अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रजब का चांद देखते तो दुआ फ़रमाया करते थे:

"اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْ رَجَبَ وَشَعْبَانَ وَبَلِّغْنَا رَمَضَانَ" (مجمع الزوائد ج۲)

ऐ अल्लाह, हमारे लिये रजब और शाबान के महीनों में बर्कत अता फ़रमा और हमें रमज़ान के महीने तक पहुंचा दीजिये। यानी हमारी उम्र तइनी लम्बी कर दीजिये कि हमें अपनी उम्र में रमज़ान का महीना नसीब हो जाये। अब आप अन्दाज़ा लगायें कि रमज़ान के आने से दो महीने पहले रमज़ान का इन्तिज़ार और इश्तियाक़ शुरू हो गया, और उसके हासिल हो जाने की दुआ कर रहे हैं कि अल्लाह तआला यह महीना नसीब फ़रमा दे, यह काम वही शख़्स कर सकता है जिसको रमज़ान मुबारक की सही क़द्र व कीमत मालूम हो।

उम्र में बढ़ोतरी की दुआ

इस हदीस से यह पता चला कि अगर कोई शख़्स इस

नियत से अपनी उम्र में इज़ाफ़े और बढ़ोतरी की दुआ करे कि मेरी उम्र में इज़ाफ़ा हो जाये ताकि इस उम्र को मैं अल्लाह तआला की मर्जी के मुताबिक़ सही इस्तेमाल कर सकूं और फिर वह आख़िरत में काम आये, तो उम्र के इज़ाफ़े की यह दुआ करना इस हदीस से साबित है, इसलिये यह दुआ मांगनी चाहिये कि या अल्लाह! मेरी उम्र में इतना इज़ाफ़ा फ़रमा दे कि मैं इसमें आपकी रिज़ा के मुताबिक़ काम कर सकूं और जिस वक़्त मैं आपकी बारगाह में पहुंचूं तो उस वक़्त आपकी रिज़ा का हक़दार बन जाऊं। लेकिन जो लोग इस क़िस्म की दुआ मांगते हैं कि "या अल्लाह! अब तो इस दुनिया से उठा ही ले" हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसी दुआ करने से मना फ़रमाया है, और मौत की तमन्ना करने से भी मना फ़रमाया है। अरे तुम तो यह सोच कर मौत की दुआ कर रहे हो कि यहां (दुनिया में) हालात ख़राब हैं, जब वहां चले जायेंगे तो वहां अल्लाह मियां के पास सुकून मिल जायेगा। अरे यह तो जायज़ा लो कि तुमने वहां के लिये क्या तैयारी कर रखी है? क्या मालूम कि अगर उस वक़्त मौत आ जाये तो ख़ुदा जाने क्या हालात पेश आयें। इसलिये हमेशा यह दुआ करनी चाहिये कि अल्लाह तआला आफ़ियत फ़रमाये, और जब तक अल्लाह तआला ने उम्र मुक़र्रर कर रखी है, उस वक़्त तक अल्लाह तआला अपनी रिज़ा के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन।

ज़िन्दगी के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की दुआ़

चुनांचे हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह दुआ़ फ़रमाया करते थे:

"اَللّٰهُمَّ اَحْيِنِیْ مَا كَانَتِ الْحَيَاةُ خَيْرًا لِّیْ وَتَوَفَّنِیْ اِذَا كَانَتِ الْوَفَاةُ خَيْرًا لِّیْ" (مسند احمد ج٣)

ऐ अल्लाह! जब तक मेरे हक़ में ज़िन्दगी फ़ायदेमन्द है, उस वक़्त तक मुझे ज़िन्दगी अ़ता फ़रमा, और जब मेरे हक़ में मौत फ़ायदे मन्द हो जाये, ऐ अल्लाह! मुझे मौत अ़ता फ़रमा। इसलिये यह दुआ़ करना कि या अल्लाह! मेरी उम्र में इतना इज़ाफ़ा कर दीजिये कि आपकी रिज़ा के मुताबिक़ उसमें काम करने की तौफ़ीक़ हो जाये, यह दुआ़ करना दुरुस्त है, जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ही इस दुआ़ से मालूम होती है, कि ऐ अल्लाह! हमें रमज़ान तक पहुंचा दीजिये।

रमज़ान का इन्तिज़ार क्यों?

अब सवाल यह है कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को यह शौक़ और इन्तिज़ार क्यों हो रहा है कि रमज़ान मुबारक का महीना आ जाये, और हमें मिल जाए? वजह इसकी यह है कि अल्लाह तआ़ला ने रमज़ान मुबारक को अपना महीना बनाया है, हम लोग चूंकि ज़ाहिरी निगाह रखने वाले लोग हैं इसलिय ज़ाहिरी तौर पर हम यह समझते हैं कि रमज़ान मुबारक की यह खुसूसियत है कि यह रोज़ों

का महीना है, इसमें रोज़े रखे जायेंगे और तरावीह पढ़ी जायेंगी और बस, लेकिन हकीकत यह है कि बात यहां तक ख़त्म नहीं होती, बल्कि रोज़े हों या तरावीह हों या रमज़ान मुबारक की कोई और इबादत हो, ये सब इबादतें एक और बड़ी चीज़ की अलामत हैं, वह यह कि अल्लाह तआ़ला ने इस महीने को अपना महीना बनाया है, ताकि वे लोग जो ग्यारह महीने तक माल की दौड़ धूप में लगे रहे, और हम से दूर रहे, और अपने दुनियावी कारोबार में उलझे रहे, और गफ़लत की नींद में मुब्तला रहे, हम उन लोगों को एक महीना अपने कुर्ब (नज़्दीकी) का अ़ता फ़रमाते हैं, उनसे कहते हैं कि तुम हम से बहुत दूर चले गये थे, और दुनिया के काम धन्धों में उलझ गये थे, तुम्हारी सोच, तुम्हारी फ़िक्र, तुम्हारा ख़्याल, तुम्हारे आमाल, तुम्हारे फ़ेल ये सब दुनिया के कामों में लगे हुए थे, अब हम तुम्हें एक महीना अ़ता करते हैं, इस महीने में तुम हमारे पास आ जाओ और इसको ठीक ठीक गुज़ार लो, तो तुम्हें हमारा कुर्ब यानी निकटता हासिल हो जायेगी, क्योंकि यह हमारे कुर्ब (नज़्दीकी और निकटता) का महीना है।

इन्सान की पैदाइश का मक़सद

देखिये! इन्सान को अल्लाह तआ़ला ने अपनी इबादत के लिये पैदा फ़रमाया है। चुनांचे अल्लाह तआ़ला ने कुरआने करीम के अन्दर इर्शाद फ़रमाया:

"وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ" (الذاريات:٥٦)

फ़रमायाः यानी मैंने जिन्नात और इन्सान को सिर्फ़ एक काम के लिये पैदा किया, कि वे मेरी इबादत करें। इन्सान की जिन्दगी का असल मक़सद और उसके दुनिया में आने और दुनिया में रहने का असल मक़सद यह है कि वह अल्लाह जल्ल शानुहू की इबादत करे।

क्या फ़रिश्ते इबादत के लिये काफ़ी नहीं थे?

अब अगर किसी के दिल में यह सवाल पैदा हो कि इस मक़सद के लिये तो अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को पहले ही पैदा फ़रमा दिया था, अब इस मक़सद के लिये दूसरी मख़्लूक़ यानी इन्सान को पैदा करने की क्या ज़रूरत थी? इसका जवाब यह है कि फ़रिश्ते अगरचे इबादत के लिये पैदा किये गये थे, लेकिन वे इसलिये पैदा किये गये थे कि पैदाइशी तौर पर इबादत करने पर मजबूर थे, इसलिये कि उनकी फ़ितरत में सिर्फ़ इबादत का माद्दा रखा गया था, इबादत के अलावा गुनाह और ना फ़रमानी का माद्दा रखा ही नहीं गया था, लेकिन हज़रते इन्सान इस तरह पैदा किये गये कि उनके अन्दर ना फ़रमानी का माद्दा भी रखा गया, गुनाह का माद्दा भी रखा गया, और फिर हुक्म दिया गया कि इबादत करो। इसलिये फ़रिश्तों के लिये इबादत करना आसान था, लेकिन इन्सान के अन्दर ख़्वाहिशें हैं, जज़्बात हैं, मुहर्रिकात हैं, और ज़रूरियात हैं और गुनाह के तक़ाज़े हैं, और फिर हुक्म यह दिया गया कि गुनाहों के उन तक़ाज़ों से बचते हुए और उन जज़्बात को कन्ट्रोल करते हुए और गुनाहों की ख़्वाहिशों को कुचलते हुए अल्लाह तआला की इबादत करो।

इबादतों की दो क़िस्में

यहां एक बात और समझ लेनी चाहिये, जिसके न समझने की वजह से कभी कभी गुमराहियां पैदा हो जाती हैं, वह यह कि एक तरफ़ तो यह कहा जाता है कि मोमिन का हर काम इबादत है, यानी अगर मोमिन की नियत सही है और उसका तरीका सही है और वह सुन्नत के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ार रहा है तो फिर उसका खाना भी इबादत है, उसका सोना भी इबादत है, उसका मिलना जुलना भी इबादत है, उसका कारोबार करना भी इबादत है, उसका बीवी बच्चों के साथ हंसना बोलना भी इबादत है। अब सवाल यह पैदा होता है कि जिस तरह एक मोमिन के ये सब काम इबादत हैं, इसी तरह नमाज़ भी इबादत है, तो फिर इन दोनों इबादतों में क्या फ़र्क़ है? इन दोनों के फ़र्क़ को अच्छी तरह समझ लेना चाहिये, और इस फ़र्क़ को न समझने की वजह से बाज़ लोग गुमराही में मुब्तला हो जाते हैं।

पहली क़िस्म बराहे रास्त इबादत

इन दोनों इबादतों में फ़र्क़ यह है कि एक क़िस्म के आमाल वे हैं जो बराहे रास्त इबादत हैं, और जिनका मक़सद अल्लाह तआला की बन्दगी के अलावा कोई दूसरा नहीं है, और वे आमाल सिर्फ़ अल्लाह तआला की बन्दगी के लिये ही मुक़र्रर किये गये हैं। जैसे नमाज़ है, इस नामज का मक़सद सिर्फ़ अल्लाह तआला की बन्दगी है, बन्दा इसके ज़रिये से अल्लाह तआला की इबादत करे और अल्लाह तआला के

आगे सरे नियाज झुकाए। इस नमाज़ का कोई और मक़सद और मसरफ़ नहीं है, इसलिये यह नमाज असली इबादत और बराहे रास्त इबादत है, इसी तरह रोज़ा, ज़कात, ज़िक्र, तिलावत, सदक़ात, हज, उमरा ये सब आमाल ऐसे हैं कि इनको सिर्फ़ इबादत ही के लिये मुक़र्रर किया गया है, इनका कोई और मक़सद और मसरफ़ नहीं है, ये बराहे रास्त इबादतें हैं।

दूसरी क़िस्म, बिलवास्ता इबादत

इनके मुक़ाबले में कुछ आमाल वे हैं जिनका असल मक़सद तो कुछ और था जैसे अपनी दुनियावी ज़रूरतों और ख़्वाहिशों की तक्मील थी, लेकिन अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल से मोमिन से यह कह दिया कि अगर तुम अपने दुनियावी कामों को भी नेक नियती से हमारी मुक़र्रर की हुई हदों के अन्दर और हमारे नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत के मुताबिक़ अन्जाम दोगे तो हम तुम्हें उन कामों पर भी वैसा ही सवाब देंगे जैसे हम पहली क़िस्म की इबादत पर देते हैं। इसलिये ये इबादतें बराहे रास्त नहीं हैं बल्कि बिलवास्ता इबादत हैं, और यह इबादतों की दूसरी क़िस्म है।

"हलाल कमाना" बिलवास्ता इबादत है

जैसे यह कह दिया कि अगर तुम बीवी बच्चों के हुक़ूक़ अदा करने के लिये जायज हदों के अन्दर रह कर कमाओगे और इस नियत के साथ हलाल रिज़्क़ कमाओगे कि मेरे

ज़िम्मे मेरी बीवी के हुकूक हैं, मेरे ज़िम्मे मेरे बच्चों के हुकूक हैं, मेरे ज़िम्मे मेरे नफ़्स के हुकूक हैं। इन हुकूक को अदा करने के लिये काम रहा हूं, तो इस कमाई करने को भी अल्लाह तआला इबादत बना देते हैं। लेकिन बुनियादी तौर पर यह कमाई करना इबादत के लिये नहीं बनाया गया, इसलिये यह कमाई करना बराहे रास्त (प्रत्यक्ष रूप से) इबादत नहीं बल्कि बिलवास्ता (अप्रत्यक्ष रूप से) इबादत है।

बराहे रास्त इबादत अफ़ज़ल है

इस तफ़सील से मालूम हुआ कि जो इबादत बराहे रास्त इबादत है वह ज़ाहिर है कि उस इबादत से अफज़ल होगी जो बिलवास्ता इबादत है, और उसका दर्जा ज़्यादा होगा। इसलिये अल्लाह तआला ने यह जो फरमाया कि "मैंने जिन्नात और इन्सानों को सिर्फ़ इसलिये पैदा किया ताकि वे मेरी इबादत करें" इस से मुराद इबादत की पहली किस्म है, जो बराहे रास्त इबादत हैं। इबादत की दूसरी किस्म मुराद नहीं जो बिलवास्ता इबादत हैं।

एक डॉक्टर साहिब का वाकिआ

चन्द दिन पहले एक औरत ने मुझ से पूछा कि मेरे शौहर डॉक्टर हैं, उन्होंने अपना एक क्लीनिक खोल रखा है, मरीज़ों को देखते हैं, और नमाज़ का वक्त आता है तो वह वक्त पर नमाज़ नहीं पढ़ते, और जब रात को क्लीनिक बन्द करके घर वापस आते हैं तो तीनों नमाज़ें एक साथ पढ़ लेते हैं। मैंने उनसे कहा कि आप घर आकर सारी नमाज़ें इकट्ठी

क्यों पढते हैं, वहीं क्लीनिक में वक़्त पर नमाज़ अदा कर लिया करें ताकि कज़ा न हों। जवाब में शौहर ने कहा कि मैं मरीजों का इलाज करता हूं, यह मख़्लूक़ की ख़िदमत का काम है और मख़्लूक की ख़िदमत बहुत बडी इबादत है, और उसका ताल्लुक बन्दों के हुकूक से है, इसलिये मैं उसको तरजीह देता हूं। और नमाज़ पढ़ना चूंकि मेरा ज़ाती मामला है, इसलिये मैं घर आकर इकट्ठी सारी नमाजें पढ लेता हूं। तो वह औरत मुझ से पूछ रही थी कि मैं अपने शौहर की इस दलील का क्या जवाब दूं?

नमाज़ किसी हाल में माफ़ नहीं

हकीकत में उनके शौहर को यहां गलत फ़हमी पैदा हुई कि इन दोनों किस्म की इबादतों के मरतबे में जो फ़र्क़ है उस फर्क को नहीं समझे। वह फर्क यह है कि नमाज़ की इबादत बराहे रास्त है, जिसके बारे में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि अगर तुम जंग के मैदान में भी हो और दुश्मन मौजूद हो तब भी नमाज़ पढो, अगरचे उस वक़्त नमाज़ के तरीके में आसानी पैदा फ़रमा दी, लेकिन नमाज़ की फ़रज़ियत उस वक़्त भी ख़त्म नहीं फ़रमाई। चुनांचे नमाज़ के बारे में अल्लाह तआला का हुक्म है कि:

"اِنَّ الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ كِتَابًا مَّوْقُوْتًا" (النساء:١٠٣)

"बेशक नमाज़ अपने मुकर्ररा वक़्त पर मोमिनों पर फ़र्ज़ है"।

अब बताइये कि जिहाद से बढ कर और क्या अमल होगा, लेकिन हुक्म यह दिया कि जिहाद में भी वक़्त पर

नमाज़ पढ़ो।

मख़्लूक़ की ख़िदमत दूसरे दर्जे की इबादत है

यहां तक कि अगर एक इन्सान बीमार पड़ा हुआ है और इतना बीमार है कि वह कोई काम अन्जाम नहीं दे सकता, उस हालत में भी यह हुक्म है कि नमाज़ मत छोड़ो, नमाज़ तो ज़रूर पढ़ो, लेकिन हम तुम्हारे लिये यह आसानी कर देते हैं कि खडे होकर नहीं पढ सकते तो बैठ कर पढ लो, बैठ कर नहीं पढ सकते तो लेट कर पढ लो, और इशारे से पढ़ लो। वुज़ू नहीं कर सकते तो तयम्मुम कर लो, लेकिन पढ़ो ज़रूर। यह नमाज़ किसी हाल में भी माफ़ नहीं फ़रमाई, इसलिये कि नमाज़ बराहे रास्त और अपनी ज़ात में मक़सूद इबादत है, और पहले दर्जे की इबादत है। और डॉ. साहिब जो मरीज़ों का इलाज करते हैं यह ख़िदमते ख़ल्क़ है, यह भी बहुत बडी इबादत है लेकिन यह दूसरे दर्जे की इबादत है, बराहे रास्त इबादत नहीं, इसलिये अगर इन दोनों किस्मों की इबादतों में टक्राव और तक़ाबुल हो जाये तो उस सूरत में उस इबादत को तरजीह होगी जो बराहे रास्त इबादत है। चूंकि उन डॉ. साहिब ने इन दोनों किस्म की इबादतों के दरमियान के फ़र्क़ को नहीं समझा, इसके नतीजे में इस ग़लती के अन्दर मुब्तला हो गये।

दूसरी ज़रूरतों के मुक़ाबले में नमाज़ ज़्यादा अहम है

देखिये जिस वक़्त आप दवाख़ाने में ख़िदमते ख़ल्क़ के

लिये बैठते हैं, उस दौरान आपको दूसरी ज़रूरतों के लिये भी उठना पड़ता है। जैसे अगर लैट्रीन जाने की, या बाथरूम में जाने की ज़रूरत पेश आये तो आख़िर उस वक़्त भी तो आप मरीज़ों को छोड़ कर जायेंगे, इसी तरह अगर उस वक़्त भूख लगी हुई है और खाने का वक़्त आ गया है, उस वक़्त आप खाने के लिये वक़्फ़ा करेंगे या नहीं? जब इन कामों के लिये उठ कर जा सकते हैं तो अगर नमाज़ का वक़्त आने पर नमाज़ के लिये उठ कर जायेंगे तो उस वक़्त क्या दुश्वारी पेश आ जायेगी? और ख़िदमते ख़ल्क़ में कौन सी रुकावट पैदा हो जायेगी? जब कि दूसरी ज़रूरतों के मुक़ाबले में नमाज़ ज़्यादा अहम है। असल में दोनो इबादतों में फ़र्क़ न समझने की वजह से यह ग़लत फ़हमी पैदा हुई है। यों तो दूसरी क़िस्म की इबादत के लिहाज़ से एक मोमिन का हर काम इबादत बन सकता है। अगर एक मोमिन नेक नियती से सुन्नत के तरीक़े पर काम करे तो उसकी सारी ज़िन्दगी इबादत है, लेकिन वह दूसरे दर्जे की इबादत है, पहले दर्जे की इबादत नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात अल्लाह का ज़िक्र वग़ैरह, ये बराहे रास्त अल्लाह की इबादतें हैं, और असल में इन्सान को इसी इबादत के लिये पैदा किया गया है।

इन्सान का इम्तिहान लेना है

इन्सान को इस इबादत के लिये इसलिये पैदा फ़रमाया गया ताकि यह देखें कि यह इन्सान जिसके अन्दर हमने मुख़्तलिफ़ क़िस्म के तक़ाज़े और ख़्वाहिशें रखी हैं, हमने इसके अन्दर गुनाहों के जज़्बात और उनका शौक़ रखा है,

इन तमाम चीज़ों के बावजूद यह इन्सान हमारी तरफ़ आता है और हमें याद करता है या यह गुनाहों के तकाज़े की तरफ़ जाता है, और उन जज़्बात को अपने ऊपर गालिब कर लेता है, इस मकसद के लिये इन्सान को पैदा किया गया।

यह हुक्म भी ज़ुल्म न होता

जब यह बात सामने आ गई कि इन्सान की ज़िन्दगी का मकसद इबादत है, इसलिये अगर अल्लाह तआला हमें और आपको यह हुक्म देते कि चूंकि तुम दुनिया के अन्दर इबादत के लिये आये हो और तुम्हारी ज़िन्दगी का मकसद भी इबादत है, तो अब सुबह से शाम तक तुम्हारा और कोई काम नहीं, बस एक ही काम है, और वह यह कि तुम हमारे सामने हर वक्त सज्दे में पड़े रहो और हमारा ज़िक्र करते रहो और जहां तक ज़िन्दगी की ज़रूरतों का ताल्लुक है तो चलो हम तुम्हें इतनी मोहलत देते हैं कि दरमियान में इतना वक्फ़ा करने की इजाज़त है कि तुम दरमियान में दोपहर का खाना और शाम का खाना खा लिया करो, ताकि तुम ज़िन्दा रह सको, लेकिन बाकी सारा वक्त हमारे सामने सज्दे में रहते हुए गुज़ार दो। और अगर अल्लाह तआला यह हुक्म जारी कर देते तो क्या हम पर कोई ज़ुल्म होता? हरगिज़ नहीं, इसलिये कि हमें पैदा ही इसी काम के लिये किया गया है।

हम और आप बिके हुए माल हैं

इसलिये एक तरफ़ तो इबादत के मकसद से पैदा फ़रमाया और दूसरी तरफ़ अल्लाह तआला ने यह भी फ़रमा

दियाः

اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ۔ (التوبة:١١١)

यानी अल्लाह तआला ने तुम्हारी जानें और तुम्हारा माल ख़रीद लिया है, और उसकी कीमत जन्नत लगा दी है। इसलिये हम और आप तो बिके हुए माल हैं, हमारी जान भी बिकी हुई है और हमारा माल भी बिका हुआ है। अब अगर उनको ख़रीदने वाला जिसने उनकी इतनी बड़ी कीमत लगाई है, यानी जन्नत, जिसकी चौड़ाई आसमान और ज़मीन के बराबर है, वह ख़रीदार अगर यह कह दे कि तुम्हें सिर्फ़ अपनी जान बचाने की हद तक खाने पीने की इजाज़त है और किसी काम की इजाज़त नहीं है, बस हमारे सामने सज्दे में पड़े रहो, तो उसे यह हुक्म देने का हक था, हम पर कोई ज़ुल्म न होता, लेकिन यह अजीब ख़रीदार है जिसने हमारी जान व माल को ख़रीद लिया और उसकी इतनी बड़ी कीमत भी लगा दी और साथ साथ यह भी कह दिया कि हमने तुम्हारी जान भी ख़रीद ली अब तुम्हें ही वापस कर देते हैं, तुम ही अपनी जान से फ़ायदा उठाओ और सारी ज़िन्दगी इस से काम लेते रहो। खाओ, कमाओ, तिजारत करो, नौकरी करो और दुनिया की दूसरी जायज़ ख़्वाहिशें पूरी करो, सब की तुम्हें इजाज़त है, बस इतनी बात है कि पांच वक्त हमारे दरबार में आ जाया करो, और थोड़ी सी पाबन्दी लगाते हैं कि यह काम इस तरह करो और इस तरह न करो, बस इन कामों की पाबन्दी कर लो, बाकी तुम्हें खुली छूट है।

इन्सान अपनी ज़िन्दगी का मक़सद भूल गया

अब जब अल्लाह तआला ने हज़रते इन्सान को उसकी जान और उसका माल वापस दे दिया और यह कह दिया कि तुम्हारे लिये तिजारत भी जायज़, नौकरी भी जायज़, खेती भी जायज़ सब चीज़ें जायज़ कर दीं तो इसके बाद जब यह हज़रते इन्सान तिजारत करने के लिये और नौकरी करने के लिये, खेती करने और खाने कमाने के लिये निकले तो वह यह भूल गये कि हम इस दुनिया में क्यों भेजे गये थे? और हमारी ज़िन्दगी का मक़सद क्या था? किसने ख़रीदा था? और उस ख़रीदारी का क्या मक़सद था? उसने हम पर क्या पाबन्दियां लगाई थीं? और क्या अह्काम हमें दिये थे? ये सब बातें तो भूल गये और अब ख़ूब तिजारत हो रही है, ख़ूब पैसा कमाया जा रहा है, और आगे बढ़ने की दौड़ लगी हुई है, और इसी की फ़िक्र है और इसी में दिन रात लगा हुआ है। और अगर किसी को नमाज़ की फ़िक्र हुई भी तो भाग दौड़ की हालत में मस्जिद में हाज़िर हो गया, अब दिल कहीं है, दिमाग़ कहीं है और जल्दी जल्दी जैसी तैसी नमाज़ अदा की और फिर वापस जाकर तिजारत में लग गया, और कभी मस्जिद में भी आने की तौफ़ीक़ नहीं हुई तो घर में पढ़ ली, और कभी नमाज़ ही न पढ़ी और क़ज़ा कर दी, इसका नतीजा यह हुआ कि यह दुनियावी और तिजारती सरगरमियां (गतिविधयां) इन्सान पर ग़ालिब आती चली गयीं।

इबादत की ख़ासियत

इबादत का ख़ास्सा यह है कि अल्लाह तआला के साथ

इन्सान का रिश्ता जोड़ती है, उसके साथ ताल्लुक क़ायम करती है, जिसके नतीजे में इन्सान को हर वक़्त अल्लाह तआला का कुर्ब (निकटता) हासिल होता है।

दुनियावी कामों की ख़ासियत

दूसरी तरफ़ दुनियावी कामों की ख़ासियत यह है कि अगरचे इन्सान उनको सही दायरे में रह कर भी करे, मगर फिर भी ये दुनियावी काम धीरे धीरे इन्सान को गुनाह की तरफ़ ले जाते हैं, और रूहानियत से दूर करते हैं। अब जब ग्यारह महीने इसी दुनियावी कामों में गुज़र गये और इसमें माद्दियत का ग़लबा रहा और रुपये पैसे हासिल करने और ज़्यादा से ज़्यादा जमा करने का ग़लबा रहा तो उसके नतीजे में इन्सान पर माद्दियत ग़ालिब आ गयी, और इबादतों के ज़रिये जो रिश्ता अल्लाह तबारक व तआला के साथ क़ायम होना था, वह रिश्ता कमज़ोर हो गया, उसके अन्दर कमज़ोरी आ गयी। और जो नज़्दीकी हासिल होनी थी वह हासिल न हो सकी।

रहमत का ख़ास महीना

तो चूंकि अल्लाह तबारक व तआला जो इन्सान के ख़ालिक़ (पैदा करने वाले) हैं, वह जानते थे कि यह हज़रते इन्सान जब दुनिया के काम धन्धे में लगेगा तो हमें भूल जायेगा, और फिर हमारी इबादतों की तरफ़ इसका इतना लगाव नहीं होगा जितना दुनियावी कामों के अन्दर इसको लगाव होगा, तो अल्लाह तआला ने इस इन्सान से फ़रमाया

कि हम तुम्हें एक मौक़ा और देते हैं और हर साल तुम्हें एक महीना देते हैं, ताकि जब तुम्हारे ग्यारह महीने इन दुनियावी काम धन्धों में गुज़र जायें और माद्दे के और रुपये पैसे के चक्कर में उलझे हुए गुज़र जायें तो अब हम तुम्हें रहमत का एक ख़ास महीना अता करते हैं, उस एक महीने के अन्दर तुम हमारे पास आ जाओ ताकि ग्यारह महीनों के दौरान तुम्हारी रूहानियत में जो कमी आ गयी है, और हमारे साथ ताल्लुक़ और नज़्दीकी में जो कमी आ गयी है, इस मुबारक महीने में तुम उस कमी को दूर कर लो। और इस मक़सद के लिये हम तुम्हें यह हिदायत का महीना अता करते हैं कि तुम्हारे दिलों पर जो ज़ंग लग गया है उसको दूर कर लो, और हमसे जो दूर चले गये हो अब क़रीब आ जाओ, और जो ग़फ़लत तुम्हारे अन्दर पैदा हो गयी है उसको दूर करके अपने दिलों को ज़िक्र से आबाद कर लो। इस मक़सद के लिये अल्लाह तआला ने रमज़ान का महीना अता फ़रमाया, इन मक़सदों के हासिल करने के लिये और अल्लाह तआला की नज़्दीकी पैदा करने के लिये रोज़ा अहम तरीन उन्सुर है, रोज़े के अलावा और जो इबादतें इस मुबारक महीने में मश्रू की गयी हैं वे भी सब अल्लाह तआला की निकटता के लिये अहम अनासिर हैं। अल्लाह तआला का मक़सद यह है कि दूर भागे हुए इन्सान को इस महीने के ज़रिये अपनी नज़्दीकी अता फ़रमायें।

अब निकटता हासिल कर लो

चुनांचे इर्शाद फ़रमायाः

"يَـآاَيُّهَـاالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ. (البقرة:١٨٣)

ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गये, जिस तरह तुम से पहले लोगों पर फ़र्ज़ किये गये थे, ताकि तुम्हारे अन्दर तक़्वा पैदा हो। ग्यारह महीनों तक तुम जिन कामों में मुब्तला रहे हो, उन कामों ने तुम्हारे तक़्वा की ख़ासियत को कमज़ोर कर दिया, अब रोज़े के ज़रिये उस तक़्वा की ख़ासियत को दोबारा ताक़तवर बना लो, इसलिये यह बात सिर्फ़ इस हद तक ख़त्म नहीं होती कि रोज़ा रख लिया और तरावीह पढ़ लीं, बल्कि पूरे रमज़ान को इस काम के लिये ख़ास करना है कि ग्यारह महीने हम लोग अपनी असल ज़िन्दगी के मक़सद से और इबादत से दूर चले गये थे, उस दूरी को ख़त्म करना है, और अल्लाह तआला का क़ुर्ब (निकटता) हासिल करना है। इसका तरीक़ा यह है कि रमज़ान के महीने को पहले ही से ज़्यादा से ज़्यादा इबादतों के लिये फ़ारिग़ किया जाये। इसलिये कि दूसरे काम धन्धे तो ग्यारह महीने तक चलते रहेंगे, लेकिन इस महीने के अन्दर उन कामों को जितना मुख़्तसर से मुख़्तसर कर सकते हो कर लो, और इस महीने को ख़ालिस इबादतों के कामों में ख़र्च कर लो।

रमज़ान का स्वागत

मेरे वालिद मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब

रहमतुल्लाहि अलैहि फरमाया करते थे, कि रमज़ान का स्वागत और उसकी तैयारी यह है कि इन्सान पहले से यह सोचे कि मैं अपने हर दिन के कामों में से, जैसे तिजारत, नौकरी, खेती वग़ैरह के कामों में से किन किन कामों को टाल सकता हूं, उनको टाल दे, और फिर उन कामों से जो वक़्त बचे उसको इबादत में लगाये।

रमज़ान में सालाना छुट्टियां क्यों?

हमारे दीनी मदरसों में एक ज़माने से यह रिवाज और तरीका चला आ रहा है कि सलाना छुट्टियां हमेशा रमज़ान मुबारक के महीने में की जाती हैं। १५ शाबान को तालीमी साल खत्म हो जाता है और १५ शाबान से लेकर १५ शव्वाल तक दो महीने की सालाना छुट्टियां हो जाती हैं। शव्वाल से नया तालीमी साल शुरू होता है, यह हमारे बुज़ुर्गों का जारी किया हुआ तरीका है। इस तरीके पर लोग एतिराज करते हुए कहते हैं कि देखो ये मौलवी साहिबान रमज़ान में लोगों को इस बात का सबक देते हैं कि आदमी रमज़ान के महीने में बेकार हो कर बैठ जाये, हालांकि सहाबा—ए—किराम ने तो रमज़ान मुबारक में जिहाद किया और दूसरे काम किये, खूब समझ लें कि अगर जिहाद का मौका आ जाये तो बेशक आदमी जिहाद भी करे, चुनांचे ग़ज़वा—ए—बदर और फ़तहे मक्का रमज़ान मुबारक में हुए, लेकिन जब साल के किसी महीने में छुट्टी करनी ही है तो उसके लिये रमज़ान के महीने को इसलिये चुना ताकि उस महीने को ज़्यादा से ज़्यादा अल्लाह तआला की बराहे रास्त इबादत के लिये फ़ारिग कर

सकें।

अगरचे इन दीनी मदरसों में पूरे साल जो काम होते हैं वे भी सब के सब इबादत हैं। जैसे कुरआने करीम की तालीम, हदीस की तालीम, फ़िक़ा की तालीम वगैरह, मगर ये सब बिलवास्ता इबादतें हैं, लेकिन रमज़ान मुबारक में अल्लाह तआला यह चाहते हैं कि इस महीने को मेरी बराहे रास्त इबादतों के लिये फ़ारिग़ कर लो, इसलिये हमारे बुज़ुर्गों ने यह तरीक़ा इख़्तियार फ़रमाया है कि जब छुट्टी करनी ही है तो बजाए गर्मियों में छुट्टी करने के रमाजान में छुट्टी करो, ताकि रमज़ान का ज़्यादा से ज़्यादा वक़्त अल्लाह तआला की बराहे रास्त इबादतों में लगाया जा सके, इसलिये रमज़ान मुबारक में छुट्टी करने का असल मन्शा यह है।

बहर हाल! रमज़ान मुबारक में छुट्टी करना जिनके इख़्तियार में हो वे हज़रात तो छुट्टी कर लें, और जिन हज़रात के इख़्तियार में न हो वे कम से कम अपने औक़ात (समय) को इस तरह तरतीब दें कि उसका ज़्यादा से ज़्यादा वक़्त अल्लाह तआला की बराहे रास्त इबादत में गुज़र जाये। और हक़ीक़त में रमज़ान का मक़सद भी यही है।

हुज़ूर सल्ल. को इबादाते मक़सूदा का हुक्म

मेरे वालिद माजिद रहमतुल्लाहि अलैहि ने एक बार फ़रमाया कि देखो कुरआने करीम की सूरः 'अलम नशरह' में अल्लाह तआला ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ख़िताब करते हुए इर्शाद फ़रमाया:

"فَإِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ، وَإِلَىٰ رَبِّكَ فَارْغَبْ" (سورة الم نشرح)

यानी जब आप (दूसरे कामों से जिनमें आप मश्गूल हैं) फ़ारिग़ हो जायें तो अल्लाह तआला की इबादत में थकिये। किस काम के करने में थकिये? नमाज़ पढ़ने में, अल्लाह तआला के सामने खड़े होने में, अल्लाह तआला के समाने सज्दा करने में थकिये, और अपने रब की तरफ रग़बत का इज़हार कीजिये। मेरे वालिद माजिद रह्मतुल्लाहि अलैहि फ़रमाया करते थे कि तुम ज़रा सोचो तो सही कि यह ख़िताबा किस ज़ात से हो रहा है? यह ख़िताब हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हो रहा है, और आप से यह कहा जा रहा है कि जब आप फ़ारिग़ हो जायें, यह तो देखो कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किन कामों में लगे हुए थे, जिन से फ़राग़त के बाद थकने का हुक्म दिया जा रहा है? क्या हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुनियावी कामों में लगे हुए थे? नहीं, बल्कि आपका तो एक एक काम इबादत ही था, या तो आपका काम तालीम देना था, या तब्लीग़ करना था, या जिहाद करना था, या तर्बियत और लोगों को पाक करना था, तो आपका तो अल्लाह तआला के दीन की ख़िदमत के अलावा कोई काम नहीं था, लेकिन इसके बावजूद आप से कहा जा रहा है कि जब आप उन कामों से फ़ारिग़ हो जायें तो अब आप हमारे सामने खड़े होकर थकिये। चुनांचे इसी हुक्म की तामील में जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सारी सारी रात नामज के अन्दर इस तरह खड़े होते कि आपके पांव पर सूजन आ जाती थी। इस से मालूम हुआ कि जिन कामों में

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मश्गूल थे, वे बिलवास्ता इबादत थी, और जिस इबादत की तरफ इस आयत में आपको बुलाया जा रहा था, वह बराहे रास्त इबादत थी।

मौलवी का शैतान भी मौलवी

हमारे वालिद साहिब रह्मतुल्लाहि अलैहि फरमाया करते थे कि मौलवी का शैतान भी मौलवी होता है, यानी शैतान मौलवियों को इल्मी अन्दाज से धोखा देता है। चुनांचे मौलवी का शैतान मौलवी साहिब से कहता है कि यह जो कहा जा रहा है कि तुम ग्यारह महीने तक दुनियावी कामों में लगे रहे, यह उन लोगों से कहा जा रहा है जो तिजारत और कारोबार में लगे रहे, और रोज़ी रोजगार के कामों में और दुनियावी धन्धों में और नौकरियों में लगे रहे, लेकिन तुम तो ग्यारह महीने तक दीन की खिदमत में लगे रहे, तुम तो तालीम देते रहे, तब्लीग करते रहे, वाज करते रहे, किताबें लिखते रहे, फतवे के कामों में लगे रहे, और ये सब दीन के काम हैं। हकीकत में यह शैतान का धोखा होता है। इसलिये कि ग्यारह महीने तक तुम जिन इबादतों में मश्गूल थे, वह इबादत बिलवास्ता थी, और अब रमज़ान मुबारक बराहे रास्त इबादत का महीना है। यानी वह इबादत करनी है जो बराहे रास्ता इबादत के काम हैं। उस इबादत के लिये यह महीना आ रहा है। अल्लाह तआला इस महीने को उस इबादत में इस्तेमाल करने की हम सब को तौफीक अता फरमाये, आमीन।

नज़्दीकी के चालीस दर्जे हासिल करें

अब आप अपना एक टाईम टेबल बनायें कि किस तरह यह महीना गुज़ारना है। चुनांचे जितने कामों को टाल सकते हैं उनको टाल दो। और रोज़ा तो रखना ही है और तरावीह भी इन्शा अल्लाह अदा करनी ही है। इन तरावीह के बारे में हज़रत डॉ. अब्दुल हई साहिब रह्मतुल्लाहि अलैहि बड़े मजे की बात फरमाया करते थे, कि यह तरावीह बड़ी अजीब चीज़ है, कि इसके ज़रिये अल्लाह तआला ने हर इन्सान को रोज़ाना आम दिनों के मुकाबले में ज्यादा मकामाते कुर्ब (नज़्दीकी के दर्जे) अता फरमाये हैं। इसलिये कि तरावीह की बीस रक्अतें हैं, जिनमें चालीस सज्दे किये जाते हैं और हर सज्दा अल्लाह तआला के कुर्ब (नज़्दीकी) का आला तरीन मकाम है, कि उस से ज्यादा आला मकाम कोई और नहीं हो सकता। जब इन्सान अल्लाह तआला के सामने सज्दा करता है और अपनी मुअज़्ज़ज़ पेशानी ज़मीन पर टेकता है और ज़बान पर "सुब्हा—न रब्बियल आला" के अल्फाज़ होते हैं तो यह अल्लाह की नज़्दीकी का वह आला तरीन मकाम होता है कि जो किसी और सूरत में नसीब नहीं हो सकता।

एक मोमिन की मेराज

यही नज़्दीकी का मकाम हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेराज के मौके पर लाये थे, जब मेराज के मौके पर आपको इतना ऊंचा मकाम बख़्शा गया तो हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सोचा कि मैं अपनी उम्मत के लिये क्या तोहफा लेकर जाऊं, तो अल्लाह तआला ने

फ़रमाया कि उम्मत के लिये ये "सज्दे" ले जाओ, इनमें से हर सज्दा मोमिन की मेराज है। फ़रमायाः

"الصلوة معراج المؤمنين"

यानी जिस वक़्त कोई मोमिन बन्दा अपनी पेशानी (माथा) अल्लाह तआला की बारगाह में ज़मीन पर रख देगा तो उसको मेराज हासिल हो जायेगी। इसलिये यह सज्दा अल्लाह की नज़्दीकी का मक़ाम है।

सज्दे में अल्लाह की निकटता

सूरः इक़रा में अल्लाह तआला ने कितना प्यारा जुम्ला इर्शाद फ़रमायाः (यह सज्दे की आयत भी है, इसलिये तमाम हज़रात सज्दा भी कर लें) फ़रमायाः

"وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ" (سورۂ علق:١٩)

सज्दा करो और हमारे पास आ जाओ। मालूम हुआ कि हर सज्दा अल्लाह के साथ क़ुर्ब (निकटता) का एक ख़ास मर्तबा रखता है, और रमज़ान के महीने में अल्लाह तआला ने हमें चालीस सज्दे और अता फ़रमा दिये, जिसका मतलब यह है कि चालीस अपनी निकटता के मकाम हर बन्दे को रोज़ाना अता किये जा रहे हैं। ये इसलिये दिये कि ग्यारह महीने तक तुम जिन कामों में लगे रहे, उन कामों की वजह से हमारे और तुम्हारे दरमियान कुछ दूरी पैदा हो गयी है, उस दूरी को ख़त्म करने के लिये रोज़ाना चालीस नज़्दीकी के मक़ामात देकर हम तुम्हें क़रीब कर रहे हैं, और वह है 'तरावीह'। इसलिये इस तरावीह को मामूली मत समझो, बाज़ लोग कहते

हैं कि हम तो आठ रक्अत तरावीह पढ़ेंगे, बीस नहीं पढ़ेंगे। इसका मतलब यह हुआ कि अल्लाह तआला तो यह फ़रमा रहे हैं कि हम तुम्हें चालीस मक़ामाते नज़्दीकी अता फ़रमाते हैं, लेकिन ये हज़रात कहते हैं कि नहीं साहिब, हमें तो सिर्फ़ सोलह ही काफ़ी हैं चालीस की ज़रूरत नहीं। हक़ीक़त यह है कि उन लोगों ने इन अल्लाह की नज़्दीकी के मक़ामात की क़द्र नहीं पहचानी, तभी तो ऐसी बातें कर रहे हैं।

क़ुरआने करीम की तिलावत ख़ूब ज़्यादा करें

बहर हाल, रोज़ा तो रखना ही है और तरावीह तो पढ़नी ही है इसके अलावा भी जितना वक़्त हो सके इबादतों में लगाओ, जैसे क़ुरआने करीम की तिलावत का ख़ास एहतिमाम करो, क्योंकि इस रमज़ान के महीने को क़ुरआने करीम से ख़ास मुनासबत है, इसलिये इसमें ज़्यादा से ज़्यादा तिलावत करो। हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रह्मतुल्लाहि अलैहि रमज़ान मुबारक में रोज़ाना एक क़ुरआने करीम दिन में ख़त्म किया करते थे और एक क़ुरआने करीम रात में ख़त्म किया करते थे, और एक क़ुरआने करीम तरावीह में ख़त्म फ़रमाते थे, इस तरह पूरे रमज़ान में इकसठ क़ुरआने करीम ख़त्म किया करते थे। बड़े बड़े बुज़ुर्गों के मामूलात में तिलवाते क़ुरआन करीम दाख़िल रही है, इसलिये हम भी रमज़ान मुबारक में आम दिनों की मिक़दार (मात्रा) के मुक़ाबले में तिलावत की मिक़दार (मात्रा) को ज़्यादा करें।

नवाफ़िल की ज़्यादती करें

दूसरे दिनों में जिन नवाफ़िल को पढने की तौफ़ीक़ नहीं होती, उनको रमज़ान मुबारक में पढ़ने की कोशिश करें, जैसे तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने की आम दिनों में तौफ़ीक़ नहीं होती लेकिन रमज़ान मुबारक में रात के आख़री हिस्से में सहरी खाने के लिये उठना होता ही है, थोड़ी देर पहले उठ जायें और उसी वक़्त तहज्जुद की नमाज़ पढ़ लें, इसके अलावा इश्राक़ के नवाफ़िल, चाश्त के नवाफ़िल, अव्वाबीन के नवाफ़िल, आम दिनों में अगर नहीं पढ़े जाते तो कम से कम रमज़ान मुबारक में तो पढ़ लें।

सदक़ों की ज़्यादती करें

रमज़ान मुबारक में ज़कात के अलावा नफ़्ली सदक़े भी ज़्यादा से ज़्यादा देने की कोशिश करें। हदीस शरीफ़ में आता है कि हुज़ूर नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सख़ावत का दरिया वैसे तो सारे साल ही जारी रहता था, लेकिन रमज़ान मुबारक में आपकी सख़ावत ऐसी होती थी कि जैसे झोंके मारती हुई हवाएं चलती रहती हैं, जो आपके पास आया उसको नवाज़ दिया, इसलिये हम भी रमज़ान मुबारक में सदक़े ख़ूब करें।

अल्लाह के ज़िक्र की ज़्यादती करें

इसके अलावा चलते फिरते, उठते बैठते, अल्लाह तआला का ज़िक्र कसरत से करें, हाथों से काम करते रहें और ज़बान पर अल्लाह तआला का ज़िक्र जारी रहे:

"سُبْحَانَ اللّٰهِ، وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَر. سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ. وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ.

(सुब्हानल्लाहि वल्हम्दु लिल्लाहि वला इला–ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बरु, सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही सुब्हानल्लाहिल अज़ीम, ला हौ–ल वला कुव्व–त इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम)

इनके अलावा दुरूद शरीफ़ और इस्तिग़फ़ार की कसरत करें और उनके अलावा जो ज़िक्र भी ज़बान पर आ जाये, बस चलते फिरते, उठते बैठते अल्लाह तआला का ज़िक्र करते रहें।

गुनाहों से बचने की पाबन्दी करें

और रमज़ान मुबारक में ख़ास तौर पर गुनाहों से बचें और उस से बचने की फ़िक्र करें। यह तय कर लें कि रमज़ान के महीने में यह आंख ग़लत जगह पर नहीं उठेगी, इन्शा अल्लाह। यह तय कर लें कि रमज़ान मुबारक में इस ज़बान से ग़लत बात नहीं निकलेगी, इन्शा अल्लाह। झूट, ग़ीबत या किसी का दिल दुखाने वाली कोई बात नहीं निकलेगी। रमज़ान मुबारक के महीने में इस ज़बान पर ताला डाल लो, यह क्या बात हुई कि रोज़ा रख कर हलाल चीज़ों के खाने से तो परहेज़ कर लिया, लेकिन रमज़ान में मुर्दा भाई का गोश्त खा रहे हो। इसलिये कि ग़ीबत करने को क़ुरआने करीम ने मुर्दा भाई के गोश्त खाने के बराबर क़रार दिया है। इसलिये ग़ीबत से बचने की पाबन्दी करें। झूट से

बचने की पाबन्दी करें और फुज़ूल कामों से, फुज़ूल मज्लिसों से और फुज़ूल बातों से बचने की पाबन्दी करें, इस तरह यह रमज़ान का महीना गुज़ारा जाये।

ख़ूब दुआएं करें

इसके अलावा इस महीने में अल्लाह तआला के सामने दुआ की ख़ूब कसरत करें। रहमत के दरवाज़े खुले हुए हैं। रहमत की घटायें झूम झूम कर बरस रही हैं, मग़फ़िरत के बहाने ढूंढे जा रहे हैं, अल्लाह तआला की तरफ़ से आवाज़ दी जा रही है कि है कोई मुझ से मांगने वाला जिसकी दुआयें क़बूल करूं। इसलिये सुबह का वक़्त हो या शाम का वक़्त हो या रात का वक़्त हो, हर वक़्त मांगो। वह तो यह फ़रमा रहे हैं कि इफ़तार के वक़्त मांग लो, हम क़बूल कर लेंगे, रात को मांग लो हम क़बूल कर लेंगे, रात के आख़री हिस्से में मांग लो हम क़बूल कर लेंगे। अल्लाह तआला ने ऐलान फ़रमा दिया है कि हर वक़्त तुम्हारी दुआयें क़बूल करने के लिये दरवाज़े खुले हुए हैं, इसलिये ख़ूब मांगो। हमारे हज़रत डॉ. साहिब रह्मतुल्लाहि अलैहि फ़रमाया करते थे कि यह मांगने का महीना है, इसलिये उनका मामूल यह था कि रमज़ान मुबारक में असर की नमाज़ के बाद मग़रिब तक मस्जिद ही में बैठ जाते थे और उस वक़्त कुछ तिलावत कर ली, कुछ तस्बीहात और मुनाजाते मक़बूल पढ़ ली, और उसके बाद बाकी सारा वक़्त इफ़तार तक दुआ में गुज़ारते थे, और खूब दुआयें किया करते थे। इसलिये जितना हो सके अल्लाह तआला से ख़ूब दुआयें करने की पाबन्दी करो। अपने

लिये, अपने अज़ीज़ों और दोस्तों के लिये, और अपने मुताल्लिकीन के लिये, अपने मुल्क व मिल्लत के लिये, पूरी इस्लामी दुनिया के लिये दुआयें मांगो। अल्लाह तआला ज़रूर कबूल फरमायेंगे। अल्लाह तआला हम सब को अपनी रहमत से इन बातों पर अमल करने की तौफीक अता फरमाये, और इस रमज़ान की कद्र करने की तौफीक अता फरमाये और इसके औकात (समय) को सही तौर पर ख़र्च करने की तौफीक अता फरमाये, आमीन।

واخردعوانا ان الحمد لله رب العالمين